✺ 5 अक्तुबर 2014 (26-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] आज बापदादा हर बच्चे के एक ही समय पर चार रूपों का वंश देख रहे हैं। पहला हरेक शिववंशी, दूसरा ब्रह्मा वंशी, तीसरा देवता वंशी, चौथा इष्ट देव वंशी।

2] जैसे प्रत्यक्षता का समय स्पष्ट और समीप आता जा रहा है वैसे आप सबके देव वंश अर्थात् राजवंश और इष्ट वंश की प्रत्यक्षता होती जायेगी।

3] जो अब सेवा में सहयोगी साथी बनते हैं, उनमें कोई राजवंश में आते हैं कोई प्रजा में आते हैं, तो इस समय के सेवा के सहयोगी वा नजदीक के साथी और भविष्य के रायल फैमली वा प्रजा और भक्ति में इष्ट वंशी वा भक्त। इष्ट देवों की वंशावली भी दिखाते हैं।

4] ब्राह्मण वंशी सो राजवंशी छोटा वा बड़ा इष्ट देव जरूर बनते हैं तो आप सभी भक्तों के इष्ट हो।

5] किसी भली बात में क्वेश्चन मार्क उठाना अर्थात् व्यर्थ का खाता प्रारम्भ होना।

✺ योग-

1] अभी सिर्फ योग की धूप चाहिए फिर देखो कितनी विशेष आत्माओं का प्रत्यक्ष फल निकलता है। स्वत: ही आपके पास लेने के लिए आयेंगे।

✺ धारणा-

1] इष्ट देव सदा रहमदिल होगा। कौन-सा रहम? हर आत्मा को भटकने वा भिखारीपन से बचाने का। हरेक के ऊपर करेगा।

2] इष्ट देवा आत्मा सदैव सर्व के दु:ख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट बजायेगी। दूसरे का दु:ख अपने दु:ख के समान समझ सहन नहीं कर सकेगी। दु:ख को भूलाने की वा दु:खी को सुखी करने की युक्ति वा साधन सदा उसके पास जादू की चाबी के मुआफिक होगा।

3] सदा संकल्प, बोल और कर्म से प्यूरिटी की परसनल्टी दिखाई होगी।

4] सदा स्वभाव में, संस्कार में, चलन में सिम्पुल लेकिन श्रेष्ठ दिखाई देगा।

5] जैसे आपके जड़ चित्र सदा श्रृंगारे हुए दिखायें हैं वैसे सर्व गुणों के श्रृंगार से सदा सजे सजायें नज़र आयेंगे। कोई एक गुण रूपी श्रृंगार भी कम नहीं होगा।

6] ऐसी इष्ट आत्मा के फीचर्स सदा स्वयं भी कमल समान होंगे और दूसरे को भी कमल समान न्यारा और प्यारा बना देंगे।

7] ऐसी इष्ट आत्मा सदा स्थिति में अचल, अडोल होगी। जैसे मूर्ति को स्थापित करते हैं, वैसे वह चैतन्य मूर्ति सदा एकरस स्थिति में स्थित होगी।

8] वह सदा के प्रति संकल्प और बोल में वरदानी होंगे। ग्लानि वा शिकायत करने वाले के ऊपर भी वरदानी। ग्लानि करने वाले के ऊपर भी वरदानी। ग्लानि करने वाले के प्रति भी वाह-वाह के पुष्पों की वर्षा करने वाले होंगे- इसके रिटर्न में इष्ट देव रूप में पुष्पों की वर्षा ज्यादा होती है।

9] महिमा करने वाले की महिमा करना- यह कामन बात है- लेकिन ग्लानि करने वाले के गले में भी गुणमाला पहनाना, जन्म-जन्म के लिए भक्त निश्चित कर देना है वा साथ-साथ वर्तमान समय के सदा सहयोगी बननाना- निश्चित हो जाते हैं।

...2

[2]

10] अभी सब अपनी विशेषता रूपी अंगुली दो। सर्व के विशेषता की अंगुली से ही स्थापना का कार्य सम्पन्न होगा। विशेषता को गुप्त नहीं रखो। कार्य में लगाओ लेकिन निष्काम।

11] कई बच्चे शास्त्रवादियों की तरह बात बनाने में बहुत होशियार हैं। ऐसी बातें बनाते हैं जो सुनते ही बाप को भी हंसी आ जाती है लेकिन दूसरे प्रभावित हो जाते हैं। यह अनेक प्रकार की व्यर्थ बातें, व्यर्थ रजिस्टर का रोल बनाती रहती हैं, इसलिए इससे तीव्र उड़ान भरो, इनोसेंट बनो। बाप को देखो बातों को नहीं। ये बातें ही बादल हैहं इन्हें सेकण्ड में क्रास करने की विविध से सिद्धि स्वरूप बनो।

❁ **सेवा-**

1] पाण्डवों को मिलकर हर मास कोई सबूत देना चाहिए क्योंकि देहली के सपूत मशहूर हैं। सपूत अर्थात् सबूत देने वाले। देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेन्ट्रल गवर्मेन्ट है तो सेन्टर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरेक्शन मिलते हैं वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेन्ट होनी चाहिए। यही पाण्डव भवन, पाण्डव गवर्मेंट की पार्लियामेन्ट है। तो पार्लियामेन्ट में सब तरफ के सर्व मेम्बर्स की राय से नये रूल तैयार होते हैं– देहली से हर मास विशेष प्लैन्स आउट होने चाहिए तब समाप्ति समीप आयेगी और इसी पार्लियामेन्ट हाऊस में जय-जयकार होगी। पाण्डवों ने अच्छी तरह सुना ! शक्तियों के बिना पाण्डव कुछ कर ही नहीं सकते। शक्तियाँ पाण्डवों को आगे रखें और पाण्डव शक्तियों को आगे रखें तब विष्णुपुरी स्थापन होगी। विष्णुपुरी की स्थापना में कम्बाइन्ड का पार्ट है– तो स्थापना के कार्य में भी कम्बाइन्ड का कार्य चलने से ही सफलता होती है।

2] पहले तो प्लैनिंग बनाओ, जिसमें चारों ओर के महारथी और शक्तियों का संगठन होना ही चाहिए। धरनी पर महारथियों का इकट्ठा होना भी स्थापना के कार्य को वृत्ति और वातावरण से समीप लाने का कार्य करता है। जैसे मधुबन चरित्र भूमि है, मिलन भूमि है, बाप को साकार रूप में अनुभव कराने वाली भूमि है वैसे देहली की धरनी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है तब देहली से आवाज निकलेगा। अभी सबकी बुद्धियों में यह संकल्प तक उत्पन्न हुआ है कि जो कुछ कर रहे हैं, जो चल रहा है उससे कुछ होना नहीं है, अभी सब सहारे टूटने लगे हैं- इसलिए ऐसे समय पर यथार्थ सहारा अभी जल्दी ढूंढेंगे। माँग करेंगे। ऐसी नई बात कोई सुनावे और आखरीन में चारों तरफ भटकने के बाद बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकायेंगे। समझा- अब देहली वालों को क्या करना है !

◆ **विचार सागर-मंथन के लिए स्पेशल होमवर्क** ◆

बापदादा का एक प्रश्न है– **कोई-कोई महारथियों के संस्कार ब्रह्मा समान ज्यादा हैं और कोई-कोई के विष्णु समान संस्कार हैं। कोई की जन्मपत्री में आदि से अन्त तक स्थापना के निमित्त बनने के संस्कार हैं और कोई-कोई के पालना के संस्कार हैं- इसका रहस्य क्या है? इस पर रूहरिहान करना। दोनों ही विशेष आत्मायें भी हैं लेकिन अन्तर भी विशेष है। तो दोनों में नम्बरवन कौन हुए और इसका भविष्य के साथ क्या सम्बन्ध है? वर्तमान दोनों की विशेष प्राप्तियाँ क्या हैं और दोनों के पूजन में भी अन्तर क्या है?** *(इस पर रूहरिहान करना, बड़ी टापिक है ना। इस टापिक से अपना पूज्य रूप भी समझ सकेंगे कि मेरा कौन-सा रूप होगा? वह भासना आयेगी। जैसे अभी आपको कोई आप के नाम से बुलाता है तो झट फील होता है ना कि मुझे बुला रहे हैं- ऐसे स्पष्ट भासना आयेगी।)*